रात्रीक्लास 2.3.68 ओमशांति "आत्मअभिमानी भव"

बच्चों को यह बेहद का बाप तो बहुत फेमिलियर लगता होगा। कहते हैं हम तो हर कल्प आता हूँ पढ़ाने। जैसे टीचर बात करते हैं ना। अभी2 तुमको राजयोग सिखाया था। इनसे पहले तो कृष्ण के लिए समझते थे। अभी फर्क यह सुना है कृष्ण भगवान नहीं शिव भगवानुवाच है। और है यह फैमलियर। कृष्ण तो हो न सके। वह प्रिंस है ,पुनर्जन्म में आते हैं। यह बाप तो पुनर्जन्म में नहीं आते। कृष्ण को पतित–पावन वा सर्वशक्तिवान कौन कहेंगे? यह है भारत की बड़ी ते बड़ी भूल। वह सुप्रीम टीचर ,वह पहला नम्बर बच्चा जो पढ़ता है उनका नाम डाल दिया है। बाप कहते हैं मैं इनको भी ,तुमको भी पढ़ाता हूँ। यह जाकर कृष्ण बनेंगे। तुम जाकर देवी–देवता बनेंगे। सामने कृष्ण को देख खुश होता हूँ। बाप भी कहते हैं कितना बार बनाया है। पार्ट बजाता आता हूँ। तुम भी जानते हो 84जन्म का पार्ट अनगिनत बार बजाया है। मैं कितना तुम बच्चों से फैमलियर हूँ। कल्प2 पढ़ाया है। फिर आकर तुम ही बच्चों को पढ़ाऊँगा। ऐसे फैमिलियर बाप को भूल क्यों जाते हो? कहते बाबा योग नहीं लगता है। आपको हम याद नहीं करते हैं। अरे, कहते भी हो अनेक बार बाप से मिले हैं फिर भी भूल क्यों जाते हो? योग अक्षर छोड़ दो। बाप तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। पतित–पावन कह बुलाते भी हो ना। यह तो बहुत ही फैमिलिर पतित दुनियां में निमंत्रण देते हो। आकर पावन बनाओ। हमारी सेवा करो। फिर ऐसे बाप को याद नहीं कर सकते हैं। वह लव, रिगार्ड नहीं रहता। ऐसे बाप को हम भूल कैसे सकते? जिस्मानी फैमिलियर हर जन्म बदलते हैं। बहुतों से फैमिलियर होते2 बाप को भूल गए हो। बाप आते हैं कल्प बाद। हिस्ट्री रिपीट तो जरूर होनी ही है। सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से कुछ नहीं समझते हैं। अभी तुम समझते हो वह सब फाल्तू ही सुना। सिर्फ सुनते रहें। कहते हैं बाप ने राजयोग सिखाया था। सिर्फ सुनने से सीख सकेंगे क्या? है तो ड्रामा ;परंतु भूल कितनी है। यह है एकज भूल। मुनि–शंकराचार्य आदि तुम्हारे आगे कुछ नहीं जानते। वह तुमको तुच्छ बुद्धि कहते। तुम उनको कहते हो। स्वच्छबुद्धि को तुच्छ बुद्धि माथा टेकते हैं। बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए। कृष्ण से तो कुछ भी मिलता नहीं। मनुष्य को कोई मुझे नहीं जानते। अगर जाने तो मेरा पार्ट भी जाने। तुम भी अपने पार्ट को नहीं जानते हो। आगे चलकर तुम सब जान जावेंगे। ग्लानी करते2 कितने गिरे हैं। बाप को ठिक्कर–भित्तर, कच्छ–मच्छ अवतार कह धुर–छाई में डाल दिया है। बाप को हँसी आती है। तुमको भी हँसी आवेगी। जिस बाप ने पढ़ाया उनके बदली पढ़ने वाले का नाम लेते रहें। कितनी भूल है। कृष्णभगवानुवाच मुरली दे दी है। बच्चे को झुलाते रहते हैं। कृष्ण राजयोग सिखाया फिर कहाँ गये? क्या हुआ? रिजल्ट कुछ भी नहीं। तो बाप बैठ समझाते हैं बच्चों को तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम विष्णुपुरी के ही मालिक बनते हैं। सिखलाने वाला का नाम गुम कर दिया है। भल शिवपुरान बनाया है ;परंतु उनमें ऐसी कुछ बात है नहीं। शिव आकर राजयोग सिखाते हैं नई दुनियां स्थापन करने। बाप को वंडर लगता है। बच्चे कितने भूलते हैं। बच्चों को भुलाय देती है। क्या बन जाते हैं। तुम कितने काँटें बन पड़े हो। अभी फुल सीजन है लड़ने–झगड़ने की। और अभी है निधण के। तुम बनते हो धणी के। सारे विश्व का राज्य तुम बच्चों के सिवाय कोई कर नहीं सकता। मेरा ही पार्ट है तुमको विश्व का मालिक बनाने का। तुम खुद ही इनको नमस्ते, पूजा आदि करते रहते हो। सत्य नारायण को नर से नारायण बनने की अमर कथा सुनते हो। बाकी फिर शंकर आदि कहाँ से आया? गले में सर्प देख पार्वती ही डर जाये। ऐसी2 बातें सुनाकर मनुष्यों को क्या कर रहे हैं। राम ने बंदर सेना ली। खेल क्या वंडरफुल है। मनुष्यों ने बैठ कथायें बनाई हैं। जिसको शास्त्र कहते हैं। है जैसे नावेल। मनुष्य समझते नहीं हैं। तुम कहो तो बिगर पड़ेंगे। यह नास्तिक है। शास्त्रों को कुछ नहीं मानते हैं। भक्ति से गिरे हैं फिर मानें क्या? ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। यह बेहद का वैराग्य है। सन्यासियों को यह कुछ पता नहीं है। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम देवता बनने का वैराग्य है तो तुमको खुशी होनी चाहिए। गुप्त वेश में होने कारण माया घड़ी2 भुला देती है। बाप कहते हैं मैं तुमको हर 5000वर्ष बाद पढ़ाने आता हूँ।

तो बाप साथ जिगरी लव होना चाहिए। विश्व का मालिक सदा सुखी बनाने वाला बाप है। यहां स्त्री सौभाग्यवती होती है। पहले से ही सा0 होता है प्रिंसेज आने वाली है। बस। दुःख का नाम ही नहीं। अभी तो यहाँ क्या लगा पड़ा है। जैसे कि मनुष्य गठरों में रहते हैं। बाप आते हैं समझते हैं बच्चों को बहुत वंडर लगता होगा बाप आया है। खुशी से सारी दुनियां भूल जानी चाहिए। बाबा हमको लेने आये हैं। आत्मा पतित है जानते नहीं हैं। बाप समझाते हैं तुम कैसे पतित बने हो अब पावन बनो। भक्तिमार्ग में तुम बार2 कुम्भ के मेले पर भटके हो। बाबा को अनुभव तो है ना। कितने ठंडी में जाते हैं। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। बाबा कब दुःख नहीं देते हैं। प्यार से बच्चे2 कहते रहते हैं। सारी राजधानी स्थापन हो रही है। बाप पढ़ाते हैं तो बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। लिखते हैं बाबा योग में नहीं रह सकते। 5/10/20मिनट भी याद नहीं कर सकते। क्यों? यह बाबा अंदर में समझते हैं। यह होगा, कल्प2 होता है। फिर भी समझाता हूँ ऐसे2 करो। मैं तुम्हारा फेमिलियर नहीं हूँ? खुशी होती है ना। मैं तुम्हारा .... फैमिलियर हूँ। 5000वर्ष बाद आकर तुमको पढ़ाता हूँ। आकर अपना और रचना का परिचय देता हूँ। कितनी वंडरफुल बातें हैं। फिर भी कोई फारकती ,कोई डायर्वोस दे देते हैं। बाप कहते हैं तुम सब हो सीतायें। मैं हूँ राम। सबको रावण की जंजीर से छुड़ाने आया हूँ। तो अटेंशन से पढ़ना चाहिए। यह कमाई है सच्ची जन्मजन्मांतर की। तो अटेंशन से करनी चाहिए ना। भगवान कितना ऊँच बनाते हैं। कब भी मिस न करना चाहिए। लेट भी न आना चाहिए। बाबा आवेंगे ,रथ पर सवार हो पढ़ावेंगे। बाबा कहते हैं मैं ही आकर राजधानी स्थापन करता हूँ। बाकी तो पीछे आते–जाते एड हो जाते हैं। कितनी विशाल बुद्धि और आंतरिक खुशी होनी चाहिए। अच्छा, बच्चों को बापदादा का यादप्यार ,गुडनाइट ,नमस्ते। <u>3.5.68 रात्रीक्लास</u>– बाप राजयोग सिखला रहे हैं। कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। यह ल0ना0 जगतजीत विश्व के मालिक हैं ना। बम्बई के एक मंदिर में प्रदर्शनी हो रही है। आजकल मुदिर(मंदिर) में शादी भी होती है। ल0ना0 तो पवित्र रहते हैं। तो बाबा (ने) लिख भेजी कि तुम कितने पापात्मा हो। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। वह आदि,मध्य,अंत दुःख देती है। काम पर जीत पाने में जगतजीत ल0ना0 बने हैं। उनके मंदिर में फिर शादी आदि करते हो ,कितने पापात्मा हो। राय है हम ब्रह्माकुमारियां तो भगवानुवाच सुनाते हैं। काम चिक्षा से उतार ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हैं। तुम भ्रष्टाचारी बनाते हो, हम श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। हमको नहीं देते हो। यह शादी आदि तो पापात्मा का काम है। भगवान बाप एक कहे तुम दूसरा करते हो। तमोप्रधान भष्टाचारी बनते रहते हो। बाबा लिखकर भेजी। एक तरफ पापात्मा बनते जाते हो दूसरे तरफ बुलाते हो बाबा हमको पावन बनाओ। अभी पावन बनाने बाप आये हैं उनको हाल नहीं देते हो। पतित बनाने वालों देते हो। भगवानुवाच.....यह चैरिटी की हाल है वो ट्रस्टियों को पूछ कर देना। तो खयाल आता है हम पत्र लिखें। देखें ,कोई का कान खुलता है। हाल तो सब जगह बहुत है। हम ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हैं। पतित को पावन बनाते हैं। यह तो देने में बहुत फायदा है। समझा कर शर्माना चाहिए। किराया भी देते हैं फिर भी देते नहीं हो। लिखना चाहिए तुम पाप का काम करते हो। बुलाते हो पतित–पावन आओ। वह आते हैं पावन बनाने तो फिर तुम स्थान भी नहीं देते हो। कोई निकलेंगे जो समझेंगे यह तो बरोबर पाप है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है यह भी किसको मालूम नहीं। जबकि बाप आते पवित्र बनाने। बड़े2 आदमी खास हाल बनाते हैं शादियों के लिए। उनको भी समझाना चाहिए। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। और तुम यह हाल इसलिए बनाते हो। यह काम न छोड़ेंगे पाप बनता जावेगा। पुण्य के लिए बनाया नहीं। रावण में(के) राज्य में जो कुछ करते हैं पाप ही होता है। लेन–देन सब पाप से ही होता है। पुण्य कैसे होगा। खान–पान आदि सब पापात्मा का है। दान आदि भी पापात्मा को देते हैं। यहां तो तुमको बाप 21जन्मों लिए पदमापति बनाते हैं। अच्छा ,बच्चों को यादप्यार, गुडनाइट।